केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ-227 107 उ.प्र. (भारत)

Central Institute for Subtropical Horticulture

Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-227 107 U.P. (India).

आम में पुष्प गुच्छ मिज का प्रबन्धन

- आम के पौधों पर मिज के प्रकोप से तीन चरणों में हानि होती है। इसका पहला प्रकोप कली के खिलने की अवस्था में होता है। नये विकसित बौर में अण्डे दिये जाने तथा सूड़ी(लार्वा) द्वारा बौर के मुलायम डंठल में प्रवेश करने से बौर पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं। पूर्ण विकसित लार्वा बौर के डंठल में से निकलने के लिए छिद्र बनाते हैं।
- इसका दूसरा प्रकोप फलों के बनने की अवस्था में होता है। इन फलों में अण्डे देने तथा सूड़ी(लार्वा) के प्रवेश करने के फलस्वरूप फल पीले होकर गिर जाते हैं।
- तीसरा प्रकोप बौर को घेरती हुई पत्तियों पर होता है।
- इस कीट के प्रबन्धन हेतु अक्टूबर एवं नवम्बर माह में बाग में की गयी जुताई से मिज की सूड़ियों के साथ सुसुप्तावस्था में पड़ी प्यूपा भी नष्ट हो जाती है।
- जिन बागों में इस कीट का प्रभाव होता रहा है, वहां बौर फटने पर (जनवरी माह में) डायमेथोएट (0.06 प्रतिशत) का छिड़काव करना चाहिए। अप्रैल–मई में क्लोरपायरीफास (1.5 प्रतिशत चूर्ण) 250 ग्राम प्रति पेड़ (25–30 किग्रा./है.) के हिसाब से बुरकाव करने पर पेड़ के नीचे सूड़ियाँ नष्ट हो जाती हैं।
- फरवरी माह में भुनगे के लिए किये जाने वाले कीटनाशी के छिड़काव से इस कीट का भी नियन्त्रण स्वतः हो जाता है।

Phone :0522-2841022, 2841023, 2841024 Fax :0522-2841025

website:www.cishlko.org; E-mail:director@cish.ernet.in